THE SCIENCE WORLD
A Monthly e Magazine
ISSN:2583-2212
March 2024 Vol.4(3), 988-990

Popular Article

मुर्गियों में कॉक्सीडिओसिस रोग

पारस सैनी[1], रक्षिता शर्मा[2], आरुषी कंवर[3] एवं बाबुलाल जंगिड़[1]
[1]पशु विकृति विज्ञान विभाग, [3]पशु शरीर क्रिया विज्ञान एवं जैव रसायन विभाग,
लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, हिसार
[2]पशु विकृति विज्ञान विभाग, संस्कारम कॉलेज ऑफ वेट्रनेरी एण्ड एनिमल साइंस, झज्जर
https://doi.org/10.5281/zenodo.10821397

पशु – पक्षियों में विभिन्न प्रकार के परजीवी रोग विकासशील कृषि देशों के विस्तार और लाभप्रदता को सीमित करने वाली प्रमुख समस्या बनी हुई है। मुर्गियों में भी कई प्रकार के परजीवी रोग पाये जाते हैं। मुर्गियों के परजीवी रोगों में कॉक्सीडियोसिस एक गंभीर बीमारी है। मुर्गियों के साथ-साथ बत्तखों, खरगोशों और अन्य पक्षियों को भी प्रभावित करती है। कॉक्सीडियोसिस, दुनिया भर में, मुर्गियों की सबसे आम और आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण बीमारियों में से एक है। इस रोग के कारण शरीर के वजन में कमी, उच्च मृत्यु दर एवं निवारक और चिकित्सकीय नियंत्रण से संबंधित खर्चों के कारण आर्थिक नुकसान होता है। कॉक्सीडियोसिस आइमेरिया प्रजाति के अन्त:कोशिक (इंट्रासेल्युलर) प्रोटोजोआ परजीवी के संक्रमण से होता है। पिछले कई दशकों से कोक्सीडियन परजीवियों के कारण होने वाले संक्रमण से ब्रॉयलर उद्योग पर भारी आर्थिक प्रभाव पड़ा है। कॉक्सीडियोसिस दुनिया भर के देशों में पाया जाता है और विशेष रूप से उच्च घनत्व वाले झुंडों में प्रचलित है जहां पक्षियों/जानवरों का उनके मल के साथ सीधा संपर्क होता है। कोक्सीडिया एक एककोशिकीय जीव है जो मुर्गियों की आंत में रहता है। इससे मुर्गियों में उल्टी, दस्त, कमजोरी और वजन कम होने जैसी समस्याएं मिलती हैं। यदि यह बीमारी समय रहते नियंत्रण में न आए, तो यह पक्षियों के स्वास्थ्य पर बहुत बुरा प्रभाव डालती है और उनकी प्रजनन क्षमता को भी कम करता है। गंभीर मामलों में कॉक्सीडियोसिस से मुर्गियों की मौत भी हो सकती है। युवा चूजों में मृत्यु दर आमतौर पर अधिक पायी जाती है क्योंकि अधिकांश आइमेरिया प्रजाति 3 से 18 सप्ताह की उम्र के मुर्गियों को प्रभावित करती है। आइमेरिया की प्रजातियों में *आइमेरिया टेनेला,* विश्व स्तर पर पोल्ट्री उद्योग को प्रभावित करने वाली सबसे आम और रोगजनक प्रजाति है जिससे मुर्गियों के पाचन तंत्र की व्यापक क्षति के कारण शत-

Official Website
www.thescienceworld.net
thescienceworldmagazine@gmail.com
Published 15.03.2024

प्रतिशत रुग्णता और उच्च मृत्यु दर पाया जाता है। इसलिए, कॉक्सीडियोसिस का सही समय पर निदान और इसके उपचार हेतु सही दवाइयों के सेवन से मृत्युदर को रोका जा सकता है।

कारण

एवियन कॉक्सीडियोसिस एक आंत्र परजीवी रोग है जो आइमेरिया जीनस के प्रोटोजोअन परजीवी की कई प्रजातियों के संक्रमण होता है। यह रोग संवेदनशील पक्षियों द्वारा अपेक्षाकृत अधिक संख्या में स्पोरुलेटेड अंडाणु के अंतर्ग्रहण के बाद होता है। आइमेरिया आँत को प्रभावित करता है जिससे आँत की पोषक तत्वों को अवशोषित करने की क्षमता कम हो जाती है। यह बीमारी मुर्गियों के मल, मल से दूषित पानी और भोजन के माध्यम से फैलती है। कोक्सीडिया अंडे के रूप में प्रजनन करते हैं। कॉक्सीडियोसिस से संक्रमित मुर्गियों के मल में कोक्सीडिया के अंडाणु होते हैं। संक्रमित मुर्गियों के मल में कई दिनों या हफ्तों तक अंडाणु पाये जाते हैं। जब स्वस्थ मुर्गियां संक्रमित मुर्गियों के मल से दूषित पानी या भोजन को खाती हैं, तो वे भी कॉक्सीडियोसिस से संक्रमित हो जाती हैं।

- **आइमेरिया टेनेला:** इससे सीकल (बड़ी आंत का एक हिस्सा) कॉक्सीडियोसिस नामक रोग होता है। यह सबसे अधिक रोगजनक और बहुत आम है।
- **आइमेरिया नेकाटरिक्स:** अत्यधिक रोग जनक, बहुत आम और आंतों के कॉक्सीडियोसिस का कारण बनता है।
- **आइमेरिया ब्रुनेटी:** अत्यधिक रोग जनक, कम आम और रेक्टल (बड़ी आंत का अंतिम हिस्सा) कॉक्सीडियोसिस का कारण बनता है।

लक्षण

मुर्गियों में कॉक्सीडियोसिस के प्रमुख लक्षण निम्न हैं।

1. **कम खाने की इच्छा:** इस रोग से प्रभावित मुर्गियों में खाने कि इच्छा काफी काम हो जाती है।
2. **पतले व खूनी दस्त:** कॉक्सीडियोसिस से ग्रसित मुर्गियों में दस्त आमतौर पर बहुत पतले व खूनी होते हैं।
3. **आँत में सूजन:** कॉक्सीडियोसिस के कारण मुर्गियों कि आँत में सूजन हो जाती है और वे काफी कमजोर दिखते हैं।
4. **उत्पादन में कमी:** कॉक्सीडियोसिस के कारण मुर्गियों की उत्पादक क्षमता काम हो जाती है और वे कम अंडे देती हैं।

निदान

कॉक्सीडियोसिस का निदान संक्रमित पक्षियों के लक्षण, नैदानिक अभिव्यक्तियों, शव परीक्षण के दौरान पाये जाने वाले घावों और मल के नमूने की सूक्ष्म जाँच से किया जा सकता है।

1. प्रमुख लक्षण दस्त और पेचिश की अचानक शुरुआत।
2. कम फ़ीड रूपांतरण दर, आँत के उत्तकों और रक्त मिश्रित पानी जैसा मल आना।
3. **मल परीक्षण** - मल या आँतों कि स्क्रैपिंग में ऑसिस्ट व अन्य विकास की अवस्थाओं के प्रदर्शन से कॉक्सीडियाल संक्रमण की आसानी से पुष्टि की जाती है।

Official Website
www.thescienceworld.net
thescienceworldmagazine@gmail.com
Published 15.03.2024

4. शव परीक्षण के दौरान, रक्तस्रावी आंत्रशोथ के साथ आँतों में घावों की उपस्थिति।
5. शव परीक्षण में एकत्र किए गए ऊतक के नमूनों की हिस्टोपैथोलॉजिक जांच।

उपचार

इस बीमारी का पता चलने पर तुरंत उपचार शुरू कर दिया जाना चाहिए जिससे कि तनाव कारक को जल्द से जल्द दूर किया जा सके। कॉक्सीडियोसिस का इलाज एंटीबायोटिक दवाओं और कोक्सीडियानाशक दवाओं से किया जा सकता है। हालांकि, इन दवाओं का उपयोग करने से पहले पशु चिकित्सक से परामर्श करना आवश्यक है। पशुचिकित्सक के परामर्श के अनुसार सल्फा समूह, नाइट्रोफेरोज़ोन यौगिक, एम्प्रोलियम यौगिक, क्लोपिडोल समूह, मोनेंसिन और टेट्रासाइक्लिन यौगिक नामक दवाइयाँ दी जा सकती हैं। कॉक्सीडियोसिस का इलाज करने की तुलना में इसे रोकना कहीं अधिक आसानी से संभव है।

रोकथाम

कोक्सीडायोसिस की रोकथाम के मूल रूप से एक ही साधन हैं: कीमोप्रोफिलैक्सिस। राशन में तथाकथित एंटीकोसीडियल उत्पादों या एंटीकोसीडियल का उपयोग करके कीमोप्रोफिलैक्सिस अब तक सबसे अधिक प्रचलित है। स्थानिक क्षेत्रों में पीने के पानी में प्रोफिलैक्सिस की खुराक दी जानी चाहिए। संदिग्ध मुर्गीघर में आहार योज्य कोक्सीडियोस्टैट्स का उपयोग किया जाना चाहिए। कॉक्सीडियोसिस से बचने के लिए निम्नलिखित उपाय प्रमुख रूप से अपनाने चाहिए:

1. **स्वच्छता:** मुर्गियों के लिए साफ़ पानी, दाना और स्थान उपलब्ध कराने से उनके संजीवन में सुधार होता है। साफ़ पानी के संचयन और परिपालन के लिए सही प्रबंधन करना जरूरी है ताकि उनकी सेहत और प्रदर्शन में सुधार हो सके।
2. **उच्च गुणवत्ता वाले दाने का उपयोग:** मुर्गियों को उच्च गुणवत्ता वाले दाने खिलाने चाहिए। उचित मात्रा में खनिज, लवण व विटामिन सी भी मिलने चाहिए। इससे उनकी पोषक आवश्यकताएं पूरी होती हैं और वे स्वस्थ रहते हैं।
3. **प्रोबायोटिक्स का उपयोग:** प्रोबायोटिक्स मुर्गियों के पाचन तंत्र को सुधारकर उन्हें कॉक्सीडियोसिस से बचाने में मदद करते हैं।
4. **जाँच और इलाज:** यदि किसी मुर्गी में कॉक्सीडियोसिस के लक्षण दिखाई देते हैं, तो तुरंत पशु चिकित्सक से संपर्क करें और संदर्भित इलाज करवाएं।

निष्कर्ष

कॉक्सीडियोसिस पोल्ट्री का एक महत्वपूर्ण आंत्र परजीवी रोग है जो दुनिया भर में पोल्ट्री किसानों के आर्थिक नुकसान से जुड़ा है। कॉक्सीडियोसिस का निकन प्रमुख लक्षणों को पहचान कर मल की सुकक्षमदर्शी द्वारा जाँच तथा शव परीक्षण द्वारा किया जाता है। घरेलू व कमर्शियल मुर्गियों में कॉक्सीडियोसिस के नियंत्रण और रोकथाम के लिए एंटीकोसिडियल्स और अच्छा प्रबंधन महत्वपूर्ण है। मुर्गियों में इस बीमारी को रोकने और नियंत्रित करने के लिए उचित निदान विधियों और जैव सुरक्षा इत्यादि उपायों का पालन किया जाना चाहिए।

Official Website
www.thescienceworld.net
thescienceworldmagazine@gmail.com
Published 15.03.2024